परमेश्वर की बुलाहट को स्वीकार करना (16:9–15)

जब मैं छोटा था, तो बहुत सी अन्य बातों के साथ मुझे यह समझ नहीं आता था कि प्रचारक पौलुस के त्रोआस से फिलिप्पी जाने की बात पर इतना उत्तेजित क्यों होते हैं। वे चिल्लाकर कहते "आखिर सुसमाचार यूरोप में जा रहा था!" वे लुदिया को "यूरोप में पौलुस द्वारा बनाया पहला मसीही" कहते। मुझे लगता "फिर क्या हुआ?" "पौलुस और दूसरे लोग रोमी साम्राज्य के एक भाग से निकलकर दूसरी ओर ही तो गए थे!" मैं तो यहां तक संदेह करता था कि उस भाग को नये नियम के समयों में यूरोप कहा भी जाता था या नहीं।

इसे उन दिनों यूरोप के नाम से जाने जाने के बारे में मुझे अभी भी संदेह है,[1] परन्तु अब मुझे यह समझ आ गई है कि वह उत्तेजना क्या थी। हो सकता है कि जैसे आज हम एशिया और यूरोप का नाम लेते हैं उस समय उनका यह नाम न हो, परन्तु प्राचीन समयों में भी पूर्व और पश्चिम में अन्तर को समझा जाता था,[2] हो सकता है दोनों की सीमा जुड़ी हो, परन्तु वे अलग-अलग थे। मैं तुर्की (जहां त्रोआस के खण्डहर हैं) से यूनान तक गया हूं और यह प्रमाणित कर सकता हूं कि सभ्यताओं में अभी भी बहुत भिन्नता है। पौलुस और उसके सहकर्मियों ने मकिदुनिया में जाने की बुलाहट का उत्तर देकर, सुसमाचार के लिए एक नया क्षेत्र खोल *दिया*![3]

यह पाठ मकिदुनिया जाने के लिए बुलाए जाने पर पौलुस के उत्तर, और तब और अब के परिणामों पर केन्द्रित होगा। आशा है कि पाठ का अध्ययन करने पर हम कुछ ऐसी बातें सीखेंगे कि परमेश्वर द्वारा बुलाए जाने का उत्तर हम कैसे दे सकते हैं और कैसे हमें देना चाहिए।

शास्त्र में ध्यान से देखना

पिछले पाठ में, हमने पौलुस, सीलास, और तीमुथियुस को देखा था कि उन्होंने एशिया के रोमी इलाके में जाने की कोशिश की परन्तु परमेश्वर ने उन्हें रोक दिया था। फिर उन्होंने उत्तर में बितुनिया के इलाके में जाने की कोशिश की, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें वहां भी नहीं जाने दिया। उल्टे पांव फिरने तक, वे पश्चिम की ओर ही जा सके थे।

फिर, पश्चिम की ओर जाते हुए, अन्त में वे त्रोआस के तटीय नगर में आए। किनारे पर खड़े होकर, एजियन सागर के खूबसूरत नीले पानी को देखते हुए, यकीनन ही वे चकित होंगे कि वहां क्यों पहुंचे और परमेश्वर उनसे क्या करवाना चाहता था।[4]

एक बुलाहट (16:9, 10)

उन्होंने अधिक देर तक आश्चर्य में नहीं रहना था। "और पौलुस ने रात को[5] एक दर्शन[6] देखा कि एक मकिदुनी पुरुष[7] खड़ा हुआ, उससे बिनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर" (आयत 9)। मकिदुनिया यूनान का उत्तरी भाग था जिसे मैसिडोन के फिलिप द्वितीय और उसके पुत्र सिकन्दर महान ने प्रसिद्ध किया था। मकिदुनिया त्रोआस के उत्तर-पश्चिम में था, जहां समुद्री जहाज़ से एजियन सागर के ऊपरी हिस्से से होकर पहुंचा जा सकता था।[8]

पौलुस पूर्व का रहने वाला था और यह भी स्पष्ट है कि पश्चिम में सुसमाचार को ले जाने की बात उसके मन में अचानक नहीं आई। इन तथ्यों पर विचार कीजिए: (1) पौलुस ने पहले एशिया और फिर बितुनिया के इलाके में जाने की कोशिश की, जो कि दोनों ही पूर्व में स्थित थे। पूर्व में इतना बड़ा इलाका था कि पौलुस वहां वर्षों तक काम कर सकता था, यहां तक कि जीवन भर। (2) तो जब प्रभु ने उसे कहीं और जाने की अनुमति नहीं दी पौलुस केवल पश्चिम की ओर निकला था। (3) त्रोआस के किनारे पर खड़े होकर, पश्चिम की ओर देखते हुए भी पौलुस को प्रभु की ओर से दर्शन था कि वह एजियन सागर के पार एक नयी सभ्यता और नये लोगों में सुसमाचार को ले जा सकता है और उसे ले जाना चाहिए।

एक बार दर्शन मिलने के बाद, पौलुस ने अपने साथियों के साथ इसे साझा करने में कोई समय नहीं गंवाया और वे समझ गए कि यह परमेश्वर की ओर से संदेश था। "उसके यह दर्शन देखते ही हम ने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर, कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है"[9] (आयत 10)। जैसे कि पिछले पाठ में हमने देखा था, "हम" और "हमें" शब्द से पता चलता है कि डॉक्टर लूका उनकी मिशन टीम में उस समय शामिल हुआ।

दर्शन में, मकिदुनी पुरुष ने केवल इतना ही कहा था, "आ; और हमारी *सहायता कर*।" परन्तु, पौलुस और अन्यों ने निष्कर्ष निकाला कि परमेश्वर ने हमें "उन्हें *सुसमाचार सुनाने के लिए* बुलाया है।" संसार की सहायता करने के लिए कलीसिया के पास बहुत से ढंग हैं, परन्तु *विलक्षण* रूप में संसार की सहायता सुसमाचार बांटने से हो सकती है! जैसे ही अवसर मिले, हमें सब मनुष्यों के साथ भलाई करनी चाहिए (गलतियों 6:10), परन्तु जीवित रहने के लिए अपने विशेष उद्देश्य को कभी मत भूलें (इफिसियों 3:10, 11, 21; मत्ती 28:18-20)।

तुरन्त, वे त्रोआस से मकिदुनिया जाने वाले जहाज़ को ढूंढने लगे। परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध से उन्हें शीघ्र ही जहाज़ मिल गया। जब कोई परमेश्वर द्वारा बुलाए जाने का उत्तर देता है तो परमेश्वर स्वयं उसके साथ रहता है और उसके प्रयासों में आशीष देता है।

एक चुनौती (16:11, 12क)

समुद्री यात्रा के बारे में 11 और 12 आयतें बताती हैं। ''सो त्रोआस से जहाज खोलकर हम सीधे सुमात्राके'' में आए (आयत 11क)। सुमात्राके एक पहाड़ी टापू था जो त्रोआस और उनके गन्तव्य स्थान के लगभग मध्य था। उन्होंने सम्भवत: पहली रात सुमात्राके के निकट लंगर डाले थे। यह तथ्य कि वे ''सीधे'' आ सके, संकेत देता है कि हवा उनके पीछे से चल रही थी।[10] परमेश्वर उन्हें उनके गन्तव्य स्थान तक पहुंचाने में जल्दी कर रहा था।

पीछे मुड़कर देखना अच्छा लगता है कि कैसे छोटी-छोटी घटनाएं बाद के इतिहास को प्रभावित करती हैं। त्रोआस से मकिदुनिया की 150 मील की समुद्री यात्रा थी और उसमें केवल दो दिन लगे थे, परन्तु मानवीय घटनाओं की धारा सदा के लिए बदल गई थी। यदि किसी ने यह (या ऐसी) यात्रा न की होती, तो सम्भवत: पूर्वी जगत की कलीसियाएं पश्चिम में मिशनरी भेज रही होतीं।

पौलुस और उसके साथी ''दूसरे दिन नियापुलिस में आए''[11] (आयत 11ख)। नियापुलिस फिलिप्पी की बन्दरगाह था, जो समुद्र से 9 या 10 मील दूर था। एगनेशियन मार्ग नियापुलिस के बीच से जाता हुआ रोमी मार्ग नाम से प्रसिद्ध था,[12] जो अदरिया सागर[13] से लेकर नियापुलिस से बाइज़ेंटियुम तक फैला हुआ था।[14] इन मिशनरियों ने प्रसिद्ध मार्ग पर फिलिप्पी के लिए पश्चिम-उत्तर-पश्चिम की ओर जाने में कोई समय नहीं गंवाया।[15] वे नियापुलिस की उत्तरी पर्वत श्रेणी को पार करते हुए फिलिप्पी के मैदानी भाग की ओर गए होंगे (आयत 12क)।

दर्शन में उस आदमी ने तो केवल इतना ही कहा था कि ''आ, और हमारी सहायता कर,'' फिर पौलुस और अन्य उस इलाके के किसी दूसरे भाग के बजाय फिलिप्पी में क्यों गए? कोई संदेह नहीं, कि वे प्रभु की अगुआई पर निर्भर थे। मकिदुनिया को जाने वाला जो पहला जहाज़ उन्हें मिला, नियापुलिस में चला गया। मकिदुनिया एगनेशियन मार्ग के साथ नियापुलिस के पश्चिम की ओर फैला हुआ था, इसलिए उन्होंने इसे एक चिह्न के रूप में लिया होगा कि उन्हें उस राजमार्ग से मकिदुनिया के पार जाकर, बड़े नगरों में सुसमाचार का प्रचार करना चाहिए जो कि उन्होंने किया।

फिलिप्पी एक बड़ा नगर था। लूका ने फिलिप्पी को ''मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य नगर, और रोमियों की बस्ती'' (आयत 12क) कहा है। विद्वान वाक्यांश ''मुख्य नगर'' के अर्थ पर असहमत हैं। इन शब्दों का अर्थ मकिदुनिया की राजधानी हो सकता है, क्योंकि थिस्सलुनीके सारे प्रांत की राजधानी थी। इस वाक्यांश का अर्थ उस उप जिले की राजधानी के लिए भी नहीं हो सकता जिसमें फिलिप्पी नगर स्थापित था, क्योंकि यह सम्मान ऐम्फ़ीपुलिस को मिला था। तुलनात्मक रूप से सम्भवत: लूका का अर्थ केवल इतना ही था, कि फिलिप्पी उस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण नगर था।[16]

हमारे अध्ययन के लिए वाक्यांश ''रोमी बस्ती''[17] अधिक महत्वपूर्ण है। प्रेरितों के काम में वर्णित छह नगर रोमी बस्तियां[18] थीं, परन्तु इस प्रकार से मनोनीत केवल फिलिप्पी ही थी। मैं इन शब्दों को मुख्य पहेली मानता हूं कि परमेश्वर ने पौलुस को एशिया में प्रचार करने की अनुमति क्यों नहीं दी, बल्कि उसके मकिदुनिया आने पर ज़ोर दिया।

रोमी बस्ती को कई विशेष सुविधाएं प्राप्त थीं। अन्य सुविधाओं में एक यह थी, कि लोग स्वयं शासन करते थे और उन्हें रोम को कर नहीं देना पड़ता था। असल में, रोमी बस्ती, विदेशी धरती पर रोम का नमूना बसाना था (आयत 21)।[19] वहां के नागरिक रोमी कपड़े पहनते थे, यूनानी के बजाय लातीनी भाषा बोलते थे, रोमी प्रथाओं के अनुसार काम करते थे और पक्के देशभक्त थे (आयतें 20, 21)। कई बातों में एक रोमी बस्ती रोम के नगर से कुछ अधिक ही रोमी दिखाई देती थी।[20] फिलिप्पी में, पौलुस को रोमी संस्कृति में ऐसे डुबोया गया जो उसने पहले कभी नहीं देखा था।[21]

इस अत्यधिक रोमी वातावरण में पौलुस की सफलता ने उसके मन में रोम में सुसमाचार सुनाने की बात डाल दी थी। इससे पहले, पौलुस कई बड़े नगरों में सुसमाचार का प्रचार करके और वहां से वचन के अपने आप दूसरे इलाकों में जाने की बात से संतुष्ट था। कहीं पर, उसे यह अहसास हुआ कि यदि प्रभु के कार्य को रोम में मज़बूती से स्थापित करना है, तो हर दिशा में केवल कुछ सौ मील तक इसे फैलाने से बात नहीं बनेगी, बल्कि इसे समस्त साम्राज्य में फैलाना होगा! इसलिए, उसने रोम में जाने की योजनाएं बनाईं (रोमियों 1:9–13; 15:22–29)। शायद रोम में जाने का विचार उसे फिलिप्पी में ही आया। शायद परमेश्वर इसीलिए उसे वहां भेजना चाहता था। व्यक्तिगत तौर पर, मैं मानता हूं कि मकिदुनिया की बुलाहट केवल एक रोमी प्रांत में जाने की बुलाहट से कहीं बढ़कर है; मेरा मानना है कि यह पाप में खोए हुए संसार की ओर से सहायता के लिए पुकार थी!

एक पल के लिए, देखें कि पौलुस, सीलास, लूका, और तीमुथियुस एगनेशियन मार्ग से फिलिप्पी में आए। उस रोमी बस्ती में उस चुनौती की कल्पना करने का यत्न करें जो उनके सामने आई। इस संभावना पर भी विचार करें कि परमेश्वर की योजना में, फिलिप्पी में पहुंचना समस्त रोमी साम्राज्य में जाने से अधिक चुनौती भरा था!

एक परिवर्तित (16:12ख–15)

आयत 12 के अन्त में कहा गया है कि प्रभु के ये दास फिलिप्पी में "कुछ दिन तक रहे।" हम नहीं जानते कि यह समय कितना था परन्तु उस दौरान पौलुस और अन्यों ने एक कलीसिया स्थापित कर ली जो पौलुस की कृपापात्र बन गई, वह मण्डली जिसके वह अपने आपको सबसे अधिक निकट समझता था।[22]

मण्डली का आरम्भ अच्छा नहीं हुआ था। जहां तक हम जानते हैं, फिलिप्पी में कोई आराधनालय नहीं था।[23] इसलिए पौलुस अपना काम आराधनालय में जाकर आरम्भ नहीं कर सका, जैसे कि वह आम तौर पर करता था।[24] पहला सब्त का दिन आने पर, लूका ने टिप्पणी की: कि "... हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए, कि वहां प्रार्थना करने का स्थान होगा" (आयत 13क)। निर्वासन के दौरान जब यहूदी लोग मन्दिर में नहीं जा सकते थे, तो उन्होंने प्रार्थना के लिए नज़दीक की नदी के पास इकट्ठे होने की आदत बना ली थी (भजन संहिता 137:1; एज्रा 8:15, 21) शायद इसलिए कि नदी का इस्तेमाल औपचारिक धोने के लिए किया जा सकता है। नगर द्वारों से लगभग

एक मील पश्चिम की ओर, फिलिप्पी के निकट गैंगाइट्स नामक नदी थी।[25] पौलुस और उसके साथी यह देखने के लिए कि शायद वहां कोई सच्चे परमेश्वर में विश्वास करने वाला मिले, उस ओर चले गए।[26]

नदी पर पहुंचकर उन्हें बहुत सी महिलाएं मिलीं जो वहां प्रार्थना करने के लिए इकट्ठी हुई थीं।[27] लूका ने यह नहीं कहा कि वे यहूदी महिलाएं थीं, यहूदी मत धारण करने वालों में से थीं, या परमेश्वर का भय मानने वाली थीं; संभवत: वे परमेश्वर का भय मानने वाली थीं।[28] पता नहीं कि ये मिशनरी इस बात से निराश हुए या नहीं कि वहां कोई पुरुष नहीं था। लूका ने केवल इतना बताया, कि "[हम] बैठकर[29] उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे" (आयत 13ख)।[30] यह ध्यान देने वाली बात है कि मकिदुनिया से आए *पुरुष* ने इन मिशनरियों को बुलाया था, परन्तु उनके द्वारा परिवर्तित *महिलाएं* थीं।

परमेश्वर का भय मानने वाली महिलाओं के साथ केवल फिलिप्पी की कलीसिया की मण्डली ही आरम्भ नहीं हुई थी। संसार के चारों ओर, परमेश्वर का भय रखने वाली महिलाओं के प्रभाव और दिलचस्पी के कारण सैकड़ों मण्डलियां विद्यमान हैं। मैं ऐसी किसी मण्डली के बारे में नहीं जानता जो उस मण्डली के लगातार समर्थन के बिना अधिक देर तक रह पाई हो। परमेश्वर की योजना के अनुसार, महिलाएं सिर्फ पुलपिट भरने के लिए नहीं हैं, परन्तु उनके आवश्यक समर्थन को कम करके कभी मत आंकें!

स्त्रियों में "लुदिया[31] नामक थुआथीरा नगर की बैंजनी कपड़े[32] बेचने वाली एक भक्त स्त्री" (आयत 14क) थी। लुदिया एक व्यापारी महिला[33] थी जो थुआथीरा से अपना सामान बेचने आई थी। थुआथीरा एजियन सागर के पार एशिया के रोमी प्रांत में एक नगर था[34] (बाद में, थुआथीरा असिया की सात कलीसियाओं में से एक स्थान बना [प्रकाशितवाक्य 1:11; 2:18-29])। यह विडंबना ही है, कि पौलुस को एशिया में जाने की अनुमति न मिलने के बावजूद भी, फिलिप्पी में उसका प्रथम परिवर्तित एशिया से था।

लुदिया "बैंजनी कपड़े बेचने वाली" थी। बैंजनी रंग एक दुरूह प्रकार की सिप्पी[35] से बूंद-बूंद करके निकाला जाता था और अत्यधिक महंगा होता था। केवल राजा और धनी लोग ही "बैंजनी कपड़े" पहनने का खर्च उठा सकते थे (लूका 16:19)। यह तथ्य कि लुदिया का अपना एक बड़ा घर[36] था और सम्भवत: नौकर भी थे (आयत 15), संकेत देता है कि प्रभु ने उसे भौतिक आशीषें दी हुई थीं।

इससे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वह "परमेश्वर की भक्त"[37] थी। स्पष्ट तौर पर उसके लिए अपने व्यवसाय से बढ़कर आराधना महत्वपूर्ण थी। फिलिप्पी में सब्त धार्मिक छुट्टी का दिन नहीं था; यह दूसरे दिनों की भांति दीनार कमाने का एक और दिन था।[38] परमेश्वर की आराधना करने का अर्थ है कि लुदिया अपनी दुकान बंद करके,[39] अपने प्रतियोगियों को अवसर दे रही थी।

परन्तु लुदिया के बारे में अति महत्वपूर्ण तथ्य यह है, कि जब परमेश्वर की सच्चाई उसे बताई गई तो वह उसे सुनने और सीखने की इच्छुक थी। कई प्रकार से लुदिया "धर्मी और परमेश्वर का भय मानने वाले" कुरनेलियुस की महिला प्रतिमूर्ति है, जिसने पतरस

को बताया, कि "हम सब यहां परमेश्वर के साम्हने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें" (10:22, 33)। लूका ने कहा कि वह "सुनती थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाए"[40] (आयत 14ख)।

"प्रभु ने उसका मन खोला" के बारे में टिप्पणी करने के लिए हमें रुकना चाहिए। लुदिया के मनपरिवर्तन के लिए यह वाक्यांश विलक्षण है; मनपरिवर्तन की किसी और घटना में यह नहीं कहा गया कि प्रभु ने सुनने वालों के मन खोल दिए। इस अभिव्यक्ति का क्या महत्व है?

कैल्विनवादी[41] कलीसिया के बाहर के पापी के हृदय पर "पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष कार्य" की अपनी शिक्षा को "प्रमाणित" करने के लिए आयत 14 का इस्तेमाल करते हैं। उनका मानना है कि व्यक्ति पाप में जन्म लेता है,[42] जब तक पवित्र आत्मा उसके हृदय पर कोई आश्चर्यकर्म नहीं करता, वह सुसमाचार की बुलाहट को स्वीकार करने के योग्य नहीं होता। परन्तु, ध्यान दें, कि लुदिया का मन खुलने से *पहले* वह पौलुस की बात बड़े ध्यान से[43] सुन सकती थी; इस भाग में कोई कैल्विनवादी शिक्षा नहीं दी गई। इसलिए, हम फिर पूछते हैं, कि इस अभिव्यक्ति का क्या महत्व है?

लूका के लिए यह ज़ोर देना सामान्य बात है कि परमेश्वर ने कुछ किया, जबकि वास्तव में, उसने यह अपने *किसी प्रतिनिधि के द्वारा* किया। उदाहरण के लिए, पौलुस और बरनबास ने पहली यात्रा से लौटकर अन्ताकिया की कलीसिया को बताया, "कि परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए! और अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया" (14:27)।[44] पहले शब्दों "परमेश्वर ने ... कैसे बड़े-बड़े काम किए" पर ध्यान दें। फिर उन प्रतिनिधियों पर ध्यान दें जिनके द्वारा उसने काम किया: "हमारे साथ होकर।" परमेश्वर ने बहुत से गैर-यहूदियों को मसीही बनाया परन्तु उसने ऐसा पौलुस और बरनबास के प्रचार के *माध्यम से* किया।[45]

शास्त्र से यह स्पष्ट लगता है कि परमेश्वर ने सुसमाचार के प्रचार के *द्वारा* लुदिया का मन खोला: वह "*सुनती थी, ... ताकि पौलुस की बातों पर चित्त लगाए*" (आयत 14ख)। मकिदुनिया की बुलाहट से लुदिया के मनपरिवर्तन से वही उद्देश्य पूरा हुआ जो पवित्र आत्मा के निर्देशन में खोजे के मनपरिवर्तन और उस दर्शन से जो कुरनेलियुस के मनपरिवर्तन में इसने पापी और प्रचारक दोनों को मिला दिया (रोमियों 1:16, 22; 10:13-17; इफिसियों 6:17; इब्रानियों 4:12; याकूब 1:21)।[46] R.C.H. लैंसकी ने लिखा, "प्रभु मन को खोलता है, परन्तु वह हाथ जिससे वह द्वार को पकड़कर खींचता है, वचन ही है ... और जब हम ध्यान से सुनते हैं तो द्वार खुल जाता है।" परमेश्वर ने लुदिया के लिए ऐसा कुछ नहीं किया जो वह दूसरे सभी पापियों के लिए उनके मनपरिवर्तन में नहीं करता जब वे वचन को पढ़ते हैं। "परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता ..." (10:35)। लुदिया का उद्धार बिल्कुल उसी प्रकार हुआ जैसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में दूसरे सभी लोगों का हुआ, उसने वचन को सुना, वचन ने उसके मन को छुआ (ध्यान दें 2:37), विश्वास उत्पन्न हुआ, और उसके बाद आज्ञा मानी गई।

अभी भी यह पूरी तरह से नहीं बताया गया कि लूका ने यह कहने के बजाय कि वचन ने लुदिया को मोड़ दिया, यह कहना क्यों चुना कि ''प्रभु ने उसके मन को खोला।'' मेरे सुझाव के अनुसार लूका ने इस शब्दावली का उपयोग इसलिए किया क्योंकि जो कुछ हुआ था, उसमें उसने *परमेश्वर* का हाथ देखा अर्थात *परमेश्वर* ही था जिसने उन्हें एशिया या बितुनिया को जाने से रोका, यह *परमेश्वर* ही था जिसने उन्हें त्रोआस में दर्शन दिया था। फिर, *परमेश्वर* के पूर्वप्रबंध से ही नदी के किनारे वचन को ग्रहण करने वाले लोग लाए गए, और *उसके* आत्मा ने प्रचार के लिए उनको प्रेरित किया था। लुदिया के मन को पौलुस, सीलास, लूका या तीमुथियुस ने नहीं खोला था; सारा श्रेय केवल परमेश्वर को जाता है! यह कभी मत भूलें, कि हम पौधा लगा सकते हैं, उसे पानी दे सकते हैं, परन्तु उसे बढ़ाने वाला केवल परमेश्वर ही है (1 कुरिन्थियों 3:6)!

जब लुदिया का मन खुला तो उसने ''पौलुस की बातों पर चित्त'' लगाया (आयत 14ख)। आयत 15 ध्यान दिलाती है कि उसने और उसके घर वालों ने बपतिस्मा लिया। इससे सम्भवत: यह संकेत मिलता है कि वहां उपस्थित महिलाओं में यदि सभी नहीं तो अधिकतर तो उसके घर की सदस्य ही थीं, जो सम्भवत: उसकी दासियां भी हो सकती हैं। डुबोये जाने के लिए पानी पास ही था और निस्संदेह मसीह में बपतिस्मा लेने के लिए वे उसी समय नदी में चली गईं।[47]

वर्षों से मैं लुदिया और उसके घराने के बपतिस्मे की बहुत सी तस्वीरें देखता आया हूं। निरपवाद रूप से दृश्य एक विशाल, शांत नदी का है जिसमें पासबानों को दिखाया गया है। गैंगाइट्स नदी के किनारे खड़े लोगों में से एक होने के कारण, मैं आपको बता सकता हूं कि यह कम चौड़ी, गहरी, तेज, और शोर भरी[48] नदी है जिसके दोनों ओर मोटे-मोटे पेड़ लह-लहा रहे हैं।

नदी के किनारे से दूर जाने से पहले, मुझे वाक्यांश ''अपने घराने समेत'' के बारे में कुछ कहना है। नये नियम में चार ''घरानों के बपतिस्मे'' दर्ज हैं: कुरनेलियुस और उसके घराने का (10:24, 48), लुदिया और उसके घराने का (16:15), फिलिप्पी दारोगा और उसका घराना (16:31-34) और स्तिफनास और उसके घराने का (1 कुरिन्थियों 1:16; प्रेरितों 18:8 भी देखिए)। इन ''घरानों के बपतिस्मों'' को वे लोग ''प्रमाण'' के रूप में इस्तेमाल करते हैं जो शास्त्र में से शिशुओं के बपतिस्मे को सही ठहराने का यत्न करते हैं। उनका तर्क होता है कि ''इन घरानों में से किसी एक में, तो कोई शिशु होगा।'' परन्तु, इन तीनों घटनाओं में, धर्म शास्त्र यह स्पष्ट कर देता है कि सभी घरानों में लोग इतने बड़े थे कि वे व्यक्तिगत तौर पर प्रचार को स्वीकार कर सकते थे (10:33, 43, 44, 46-48; 16:34; 1 कुरिन्थियों 16:15)। इससे उनके लिए मुख्य ''प्रमाण'' के रूप में लुदिया के घराने का बपतिस्मा रह जाता है।

क्या लुदिया के घराने का बपतिस्मा यह प्रमाणित करता है कि शिशुओं का बपतिस्मा होना चाहिए? उन लोगों की मान्यताओं पर विचार कीजिए जिन्हें उस दिन किसी बच्चे का बपतिस्मा हुआ दिखाई देता है: (1) उनकी मान्यता है कि लुदिया विवाहित थी।[49]

(2) उनका मानना है कि उसके बच्चे थे। (3) उनका मानना है कि उसके बच्चों में से कम से कम एक तो शिशु था। (4) उनका मानना है कि लूका ने ''घराने'' में उस शिशु को शामिल किया जिसे इस तथ्य के बगैर डुबोया गया था जिसका हर जगह लूका ने ज़ोर दिया था कि बपतिस्मा लेने से पहले विश्वास करना आवश्यक है (2:37, 38; 8:36-38)। मुझे चार मान्यताओं की अनुमति दें, और मैं ''प्रमाणित'' कर सकता हूं कि जो ऊपर है-नीचे है, यहां है-वहां है, और यह कि चन्द्रमा हरे पनीर से बना है। सच्चाई की खोज करने का यह ढंग *नहीं* है। धर्म शास्त्र स्वयं किसी भी प्रकार यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं देता कि गैंगाइट्स नदी में किसी शिशु का बपतिस्मा हुआ था।

लुदिया के चरित्र का अन्तिम गुण भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि वह पहुनाई करने वाली महिला थी (रोमियों 12:13; 1 पतरस 4:9)। हम पढ़ते हैं, ''और जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया, तो उसने बिनती की, कि यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो'' (आयत 15क)। उसके निमन्त्रण को स्वीकार करने के लिए पौलुस की भावनाएं मिली-जुली थीं। एक ओर तो, मूर्तिपूजकों के घर ठहरने से किसी मसीही के घर में ठहरने को अधिक महत्व दिया जाता था। दूसरी ओर, शिष्टाचार की बात थी: यदि चार पुरुष किसी घर में ठहरें जहां महिलाएं ही रहती हों तो लोग क्या सोचेंगे? परन्तु, लुदिया ने ''न'' नहीं सुननी थी। लूका ने कहा, कि ''वह हमें मनाकर ले गई'' (आयत 15ख)। बाद में फिलिप्पी में रहने के समय, पौलुस ने लुदिया के घर में रहकर ही काम किया (16:40)।

शास्त्र की प्रासंगिकता

हम में से सभी को कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं: हम अपने जीवनों का क्या करें? क्या हमें शादी करनी चाहिए? यदि शादी करनी हो, तो किस से करें? हमें कहां रहना चाहिए? और भी बहुत सी बातें आप इसमें जोड़ सकते हैं। आज परमेश्वर हमें रात में उस प्रकार दर्शन नहीं देगा जैसे उसने पौलुस को दिया, परन्तु वह आज भी हमें अपने वचन द्वारा, अपने पूर्वप्रबन्ध के द्वारा द्वारों को खोलकर और बन्द करके, और परमेश्वर का भय रखने वाले मित्रों के द्वारा बुलाता है। हम पढ़ते हैं, ''मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है'' (भजन संहिता 37:23क)। ''उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा'' (नीतिवचन 3:6)। यदि हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहते हैं, तो हमारे पाठ से यह सुझाव मिलता है कि हमें कुछ इस प्रकार से उत्तर देना चाहिए:

(1) *तैयार रहें।* हमें तैयार रहना चाहिए-परमेश्वर की बुलाहट के लिए तुरन्त उत्तर देने के लिए तैयार रहें। पौलुस द्वारा दर्शन देखने के बाद, लूका ने कहा, कि ''... हम ने *तुरन्त* मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर, कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है'' (आयत 10)। यदि आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की विशेष योजना जानना चाहते हैं, तो आपको उसकी बुलाहट को तुरन्त स्वीकार करने के लिए तैयार रहना होगा।

(2) *लचीले बनें।* फिर, हमें लचीले होना चाहिए–हो सकता है कि परमेश्वर के उद्देश्य और योजनाएं हमारे लिए हमेशा उपलब्ध न हों। पौलुस ने दक्षिण की ओर जाना चाहा और परमेश्वर ने उसे रोक दिया; उसने उत्तर की ओर जाने की कोशिश की, परमेश्वर ने उसका मार्ग फिर रोक दिया। पौलुस और उसके साथी बिल्कुल समझ नहीं पा रहे थे कि परमेश्वर उनसे क्या करवाना चाहता है। जब वे अन्त में फिलिप्पी में पहुंचे, तो प्रचार करने के लिए पौलुस की प्रचलित जगह अर्थात आराधनालय वहां उपलब्ध नहीं था। नदी के तट पर कुछ महिलाओं से भेंट होने तक उन्हें यह समझ नहीं आया कि वे वहां क्यों नीचे गए थे। इसी प्रकार, जब आप अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा की खोज की कोशिश करते हैं, तो हो सकता है कि परमेश्वर की योजनाएं आपके लिए हमेशा स्पष्ट न हों। आपके विचार लचीले होने चाहिए और आपको यह सोचकर निराश नहीं होना चाहिए कि जितने उतावले आप हैं परमेश्वर आपका उत्तर देने में उतना उतावला नहीं है।

(3) *गतिशील बनें।* अवसरों की प्रतीक्षा करने के बजाय, हमें अवसर बनाते रहना चाहिए। पौलुस और उसके साथी भी, कहीं बैठकर प्रतीक्षा कर रहे हो सकते थे कि ''जब तक परमेश्वर निर्णय नहीं लेता कि वह हम से क्या करवाना चाहता है।'' परन्तु, वे उसकी सेवा के लिए अवसरों की तलाश में, आगे ही बढ़ते जा रहे थे।

(4) *विनम्र बनें।* अन्त में, यह विश्वास करते हुए कि यदि हम परमेश्वर की बुलाहट का सकारात्मक उत्तर देंगे, तो परमेश्वर हमें आशीष देगा, हमें विनम्र होना चाहिए। दूसरी मिशनरी यात्रा के लिए पौलुस की योजना परमेश्वर की योजना से भिन्न थी। जब परमेश्वर की योजना स्पष्ट हो गई, तो उसने सकारात्मक ढंग से उत्तर दिया और परमेश्वर ने उनके प्रयासों में आशीष दी। आत्माओं का उद्धार हुआ, और सुसमाचार के लिए एक नए महाद्वीप के द्वार खुल गए। इसी प्रकार, हम में से कइयों को परमेश्वर के उत्तर को पहचानना कठिन लग सकता है क्योंकि यह वैसा नहीं होता जैसा हम सोचते हैं कि उसे होना चाहिए। हमें इतना विनम्र होना चाहिए कि हम परमेश्वर के उत्तर को स्वीकार करके, जब उसकी इच्छा को समझ लें तो सकारात्मक रूप से उत्तर दे सकें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो आश्वस्त रहें कि अन्त में परमेश्वर आपको आशीष देगा!

सारांश

इस पाठ में, मैंने आपको परमेश्वर की बुलाहट का तुरन्त उत्तर देने के लिए हमेशा तैयार रहने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस पाठ के अन्त में, मैं आपको दो विशेष बुलाहटों के उत्तर के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूं:

यदि आप पहले से ही मसीही हैं, तो मैं आपसे ''मकिदुनिया की बुलाहट'' का उत्तर देने का आग्रह करता हूं। प्रभु को अनुमति दें कि उन सैकड़ों–हज़ारों लोगों की पुकार को सुनने के लिए वह आपके कान खोल सके, जो पुकार रहे हैं कि ''आ, और हमारी सहायता कर!'' यदि आपको लगता है कि कोई सुनने में दिलचस्पी नहीं लेता, तो फिलिप्पी को याद रखें: यह नगर अपने आप में ठण्डा रहा होगा, परन्तु नदी के तट पर ऐसे लोग थे जो इस प्रतीक्षा में थे कि कोई उन्हें बताए। यदि आप तलाश करें तो आपको लुदिया और उसके घराने के समान भले मन मिल जाएंगे, जो सच्चाई की खोज में हैं।

यदि आप पहले से मसीही नहीं हैं, तो मैं आपसे विनती करूंगा की आप सब से महत्वपूर्ण बुलाहट का उत्तर दें: अर्थात आपके उद्धार के लिए परमेश्वर की बुलाहट, और उसके विशेष लोग बन जाएं! पौलुस ने 2 थिस्सलुनीकियों 2:14 में ज़ोर दिया कि परमेश्वर हर एक को सुसमाचार के द्वारा बुलाता है। कलीसिया ''बुलाए हुए लोगों''[50] से ही बनती है-अन्य शब्दों में, कलीसिया वे लोग हैं जिन्होंने शुभ समाचार की बुलाहट का उत्तर दिया है (प्रेरितों 2:38, 41, 47)। यदि आपने लुदिया और उसके घराने के समान उत्तर नहीं दिया है, तो परमेश्वर को अनुमति दें कि वह आपका मन खोले और आप उसी समय बपतिस्मा लें, जैसे लुदिया और उसके घराने ने लिया था।

प्रवचन नोट्स

यदि आप प्रेरितों के काम में मनपरिवर्तनों की शृंखला पर प्रचार करना चाहते हैं, तो आप इस पाठ की सामग्री के साथ ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पहले पाठ में लुदिया पर सामग्री का भी उपयोग कर सकते हैं।

''प्रार्थना करने का स्थान'' (पद 13) शीर्षक से पाठ लेकर उसमें ''प्रार्थना करने का स्थान,'' ''बोलने का स्थान,'' '' सुनने का स्थान,'' ''आज्ञा पालन का स्थान,'' ''आतिथ्य का स्थान'' (लुदिया की पेशकश)जैसे उपभाग शामिल किए जा सकते हैं।

''एक स्त्री'' (पद 14) नाम से शीर्षक में लुदिया के चरित्र पर एक व्यापारी महिला, आराधक महिला, सुनने वाली महिला, वचन को मानने वाली महिला, अतिथि सत्कार करने वाली महिला के रूप में ध्यान लगाया जा सकता है। इस पाठ में, जोर दें कि प्रभु के कार्य में महिलाएं कितनी महत्वपूर्ण हैं।

पादटिप्पणियां

[1]कहते हैं कि यूरोप महाद्वीप का नाम यूरोपा नाम की एक प्रसिद्ध राजकुमारी से पड़ा, परन्तु मैं ऐसे किसी प्राचीन मानचित्र (बाइबल से सम्बन्धित या बाइबल से बाहर) को ढूंढ़ने में असमर्थ रहा हूं जिसमें यह नाम आया हो। [2]इस पाठ में, ''पूर्व'' और ''पश्चिम'' शब्दों का उपयोग हम उन दो महाद्वीपों के लिए करेंगे जिन्हें आज एशिया और यूरोप के नाम से जाना जाता है।[3] सम्भावना है, कि पौलुस के मकिदुनिया में जाने से पहले भी रोम में मसीही थे (2:10), परन्तु पौलुस तथा उसके साथियों के मकिदुनिया में जाने से पहले रोमी साम्राज्य के उस पश्चिमी भाग में सुव्यवस्थित ढंग से सुसमाचार के प्रचार का कोई परिमाण नहीं मिलता। [4]लगता नहीं कि उन्होंने सोचा कि उस समय उनके लिए परमेश्वर की योजना त्रोआस में सुसमाचार प्रचार करने की थी। कम से कम, उन्होंने वहां प्रचार तो नहीं किया। बाद में, त्रोआस में एक मण्डली स्थापित हुई (20:6-12; 2 कुरिन्थियों 2:12 भी देखिए)। [5]पौलुस जागा हुआ था या सोया, हम नहीं जानते। [6]10:3 और ''प्रेरितों के काम भाग-2'' में पृष्ठ 156 से नोट्स देखिए। [7]''एक मकिदुनी पुरुष'' अनुवाद को मूल शास्त्र का समर्थन है ''एक'' शब्द से कई अनुमान लगाए गए हैं कि यह ''एक पुरुष'' कौन हो सकता है। अनुमानों में एक यह भी है कि वह सिकन्दर महान था। इस बारे में हम कुछ नहीं कह सकते कि पौलुस इस आदमी को पहचान सकता था या नहीं। [8]पृष्ठ 55 पर मानचित्र देखिए। [9]यह तथ्य कि लूका ने कहा, ''परमेश्वर ने *हमें*... सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया'' संकेत देता है कि कुछ सीमा तक

लूका भी प्रचार करने के योग्य था (16:13 में ''हम'' शब्द भी देखिए)। [10]त्रोआस से नियापुलिस की इस यात्रा में दो दिन लगे। बाद में, इसी मार्ग पर वापसी में पांच दिन लगे (20:6)।

[11]''नियापुलिस'' ''नये'' (neos) के साथ ''नगर'' (polis) के लिए यूनानी शब्द को मिलाता है। इस प्रकार ''नियापुलिस'' का अर्थ है ''नया नगर'' आज इस नगर को कवल्ला कहा जाता है, जिसका अर्थ है ''घोड़ी।'' [12]पत्थर के इस प्राचीन राजमार्ग के कुछ भागों की खुदाई हो चुकी है। प्राचीन वाहनों के पुराने पथ आज भी देखे जा सकते हैं। पृष्ठ 55 पर मानचित्र देखिए। [13]अदरिया सागर पार ही इटली और रोम को जाने वाला अप्पियुस मार्ग था (28:15)। [14]बाइजैंटियुन को बाद में कांसटेटीनोप्ल के नाम से जाना जाने लगा। आज इसे इस्तांबुल कहा जाता है। [15]हमारे पास कोई रिकॉर्ड नहीं है कि उन्होंने इस समय नियापुलिस में प्रचार किया। पौलुस ने सम्भवत: तर्क दिया कि यदि फिलिप्पी में वचन को मान लिया गया, तो यह स्वाभाविक ही नियापुलिस में फैल जाएगा। [16]एक और सम्भावना यह है कि लूका नगर को केवल ''प्रांत का मुख्य नगर'' बना रहा था। मकिदुनिया को चार ज़िलों में बांटा गया था, और फिलिप्पी उनमें से पूर्व की ओर का पहला नगर था। [17]मूल शास्त्र में केवल ''बस्ती'' है, परन्तु लूका के पाठक जानते होंगे कि इसका अर्थ *रोमी* बस्ती ही था। ''रोमियों की बस्ती'' वाक्यांश के महत्व को समझने के लिए, हमें फिलिप्पी के इतिहास को जानना आवश्यक है: फिलिप्पी मूलत: क्रेनाइड्स का गांव था जिसका अर्थ है ''चश्मे।'' (क्रिनाइड्स का आधुनिक गांव फिलिप्पी के खण्डहरों के समीप ही है)। मेसीडोन का फिलिप द्वितीय सोने के पहाड़ के कारण इस क्षेत्र में दिलचस्पी लेने लगा। उसने इस नगर की गढ़बन्दी करके इसका नया नाम फिलिपोय रख दिया। बाद में, फिलिप्पी के मैदानों के बाहर एक युद्ध लड़ा गया, जिसमें रोमी गणतन्त्र का भाग्य तय हुआ। (शेक्सपीयर ने इस युद्ध का उल्लेख *जूलियस सीजर* नाटक में किया।) वहां पर ओक्टेवियन (अगस्तुस) और ऐंटनी ने जूलियस सीजर के हत्यारों ब्रूटुस और कैसियुस को हरा दिया। अगस्तुस के सम्राट बनने पर (लूका 2:1), उसने फिलिप्पी को एक रोमी बस्ती बना लिया। उस समय नगर को कलोनिया जूलिया अगस्तुस फिलिपेन्सियुम के नाम से जाना जाता था। लूका ने नगर के सामान्य नाम (फिलिप+ *पोलिस* [नगर]=फिलिप का नगर) का इस्तेमाल किया। [18]ये छह हैं पिसिदिया का अन्ताकिया, लुस्त्रा, त्रोआस, फिलिप्पी, कुरिन्थुस और पतुलिमयिस। हम इनमें से कइयों का पहले ही अध्ययन कर चुके हैं। [19]रोम ने रोमी बस्तियों में बहुत से अवकाश प्राप्त सैनिकों को भेजा, जहां उन्हें विशेष सहूलियतें उपलब्ध कराई जाती थीं। उनकी उपस्थिति से उस सारे क्षेत्र के निवासियों को रोम की उपस्थिति का अहसास रहता। [20]रोम का अपना भी बहुत सी संस्कृतियों के मेल का उदार स्वभाव था। उदाहरण के लिए रोम में बहुत से यहूदी और बहुत से आराधनालय थे (18:2; 28:17)। इसके विपरीत, फिलिप्पी में थोड़े ही यहूदी थे, यदि थे भी, तो वहां कोई आराधनालय नहीं था।

[21]हम पौलुस को पहले रोमी बस्तियों में देख चुके हैं; परन्तु ये पूर्व में थीं और इनमें से अधिकतर यहूदी आराधनालय का प्रभाव देती थीं। [22]जैसा कि हम देखेंगे, फिलिप्पी की कलीसिया ही वह मण्डली थी जो लगातार पौलुस की भलाई की चिन्ता करती थी। फिलिप्पी के नाम पौलुस की पत्री एक प्रेम पत्र है (फिलिप्पियों 1:3-5; 4:1)। [23]आराधनालय बनाने के लिए केवल दस व्यक्ति ही आवश्यक थे, इसलिए यह संकेत देता है कि यदि नगर में यहूदी थे तो वे बहुत ही कम थे। [24]पौलुस को जानते हुए, यदि वह और दूसरे लोग सब्त से कई दिन पहले फिलिप्पी में पहुंच गए थे, तो सम्भवत: उन्होंने क्षेत्र में यहूदी लोग ढूंढने की कोशिश करते-करते (जैसे उन्होंने लुस्त्रा में किया था जहां कोई आराधनालय नहीं था) सामान्य प्रचार किया होगा। [25]जहां तक मुझे पता है, फिलिप्पी के खण्डहरों के निकट केवल गैंगाइट्स नदी ही है, सो हम तर्कपूर्ण ढंग से निश्चित हो सकते हैं कि जिस नदी का उल्लेख प्रेरितों 16 में है, वह यही है। [26]आयत 13 की बात अनिश्चित है। इसका अर्थ हो सकता है कि उन्हें पता चला कि नदी के पास प्रार्थना करने का कोई स्थान है (देखिए KJV)। [27]हम नहीं जानते कि वे खुले आंगन में थे, किसी छप्पर के नीचे या नदी के पास किसी घर में थे। [28]मूल शास्त्र में, आयत 14 में लूदिया का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल की गई भाषा यही सुझाव देगी। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' की शब्दावली में ''परमेश्वर का भय मानने वाला'' देखिए। [29]यहूदी शिक्षक सामान्यत: शिक्षा देने के लिए बैठ जाते थे (मत्ती 5:1)। [30]निश्चय ही प्रत्येक सब्त के दिन

नदी के पास परमेश्वर का भय रखने वाली इन महिलाओं का इकट्ठा होना परमेश्वर के लिए यह सुनिश्चित करने का एक कारण था कि पौलुस और दूसरे लोग फिलिप्पी में पहुंचने पर वहां गए।

[31]लुदिया एक प्रचलित नाम था। थुआतीरा लुदिया के प्राचीन राज्य के इलाके में पड़ता था। [32]मूल शास्त्र में मूलत: ''बैंजनी बेचने वाली'' है (देखिए KJV)। यह सम्भव है कि लुदिया बैंजनी रंग बेचने वाली थी। यह अधिक सम्भव है कि वह बैंजनी रंग से रंगे कपड़े बेचती थी। ऐतिहासिक रूप से, थुआतीरा बैंजनी कपड़े बनाने के लिए प्रसिद्ध था। [33]हां, मसीही स्त्रियां व्यपारी हो सकती हैं। मैं इस बात को पहल देता हूं कि मसीही माताएं घर से बाहर काम न करें (हमारे बच्चे नज़रअन्दाज हो जाते हैं), परन्तु शास्त्र के अनुसार यदि वे घर बनाने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए अपने कार्य की भूमिका को समझकर प्राथमिकताओं को उचित स्थान दें तो व्यवसाय कर सकती हैं (तीतुस 2:4, 5)। नीतिवचन 31:10-31 में भली स्त्री बहुत से व्यवसायिक कामों में व्यस्त थी, परन्तु इन कामों के लिए उसने अपने घर को नज़रअन्दाज नहीं किया। [34]पृष्ठ 55 पर मानचित्र देखिए। [35]कइयों का सुझाव है कि लुदिया मंजिष्ठ नामक पौधे की जड़ों के रस से निकाले गए रंग, जिसे तुर्की लाल कहा जाता है, से रंगे कपड़े बेचती थी। परन्तु, क्योंकि शास्त्र कहता है कि लुदिया बैंजनी वस्त्र बेचती थी, न कि सिप्पी से निकाले लाल रंग से रंगे वस्त्र, इसलिए शास्त्र की बात सही है। [36]यह घर इतना बड़ा था जिसमें वह स्वयं, उसके नौकर और परमेश्वर के चार दास रह सकते थे। [37]प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस वाक्यांश का उपयोग परमेश्वर का भय रखने वालों के लिए कई बार किया गया है। [38]दीनार एक सिक्का होता था, जिसे सामान्यत: एक आम मजदूर के एक दिन की मजदूरी माना जाता था। [39]यहूदी लोग विदेशी नगरों में सब्त के दिन अपनी दुकानें बन्द रखते थे; लुदिया ने भी ऐसा ही किया होगा। संकेत यह है कि लुदिया के नौकर (जिन्होंने दुकान खोल रखी होगी) नदी के पास उसके साथ थे। [40]यद्यपि बोल सभी रहे थे (आयत 13), पौलुस मुख्य वक्ता लगता है (देखिए 14:12)।

[41]कैल्विनवादी उसे कहा गया है जो प्रोटैसटेन्ट सुधार के दौरान जॉन कैल्विन नामक मुख्य धार्मिक अगुवे के मुख्य सिद्धांतों को मानता है। बहुत सी साम्प्रदायिक कलीसियाएं कैल्विन की कुछ शिक्षाओं को मानती हैं। [42]इसे ''टोटल हेयरडिटरी डिप्रेविटी'' की शिक्षा कहा जाता है। पवित्र शास्त्र में यह शिक्षा नहीं मिलती (देखिए यहेजकेल 18:20; मत्ती 18:3)। [43]यूनानी शब्द का अनुवाद ''सुनती थी'' यह संकेत देते हुए कि वह सुन रही थी, अपूर्ण काल में है। एफ.एफ. ब्रूस ने इस क्रिया का अनुवाद ''ध्यान से सुना'' किया है। [44]15:4 में इसी शब्दावली का प्रयोग किया गया है। [45]15:12 में भी इसी शब्दावली का उपयोग किया गया है, और माध्यम का संकेत ''उनके *द्वारा*'' शब्दों में दिया गया है। पुराने नियम के एक उदाहरण के लिए देखिए भजन संहिता 105:41: परमेश्वर ने ''चट्टान फाड़ी''-परन्तु ऐसा उसने मूसा की क्रिया के माध्यम *से* किया (निर्गमन 17:1-7)। [46]कुछ लोगों का मानना है कि वाक्यांश ''उसका मन खोला'' का उपयोग यह संकेत देने के लिए किया गया है कि किसी प्रकार से लुदिया ने अपना मन बन्द कर रखा था। परन्तु, सम्भवत: उसका मन किसी भी प्रकार की पूर्वधारणा के कारण नहीं, बल्कि केवल अज्ञानता के कारण बन्द था। सच्चाई के ज्ञान से उसकी समझ खुल गई। [47]सम्भवत: उनका बपतिस्मा सीलास, लूका या तीमुथियुस के द्वारा हुआ था। नियम के अनुसार, पौलुस बपतिस्मा नहीं देता था (1 कुरिन्थियों 1:14-17)। [48]हमारे टूर लीडर को अपनी आवाज़ दूसरों को सुनाने के लिए जरा ज़ोर से बोलना पड़ा था। [49]आज बहुत से समाजों में, किसी बच्चे वाली महिला के लिए आप यह नहीं कह सकते कि वह शादीशुदा है या नहीं, परन्तु उस ज़माने में कह सकते थे। [50]''प्रेरितों के काम भाग-1'' में शब्दावली में देखिए ''कलीसिया।''